जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 | वर्षः 28 | संख्याः 126 | प्रभात | अजमेर, मंगलवार 5 दिसम्बर, 2023 | आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 | पृष्ठ 6 | मूल्य 2.50 रु.

राजस्थान में कांग्रेस की हार की न तो किसी ने जिम्मेवारी ली और न ही इस्तीफा दिया

प्रदेश प्रभारी रंधावा और प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा की तरफ से इस्तीफे का कोई संकेत नहीं मिला है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- गहलोत ने राज्यपाल से मुलाकात कर मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दिया है क्योंकि ऐसा करना संवैधानिक मजबूरी है।
- हार के कारणों पर मंथन के लिए रंधावा और डोटासरा ने बैठक बुलाई थी पर जिसकी जिद ने पार्टी को यहां तक पहुंचाया वो बैठक में नहीं पहुंचे।
- अभी तक भी कांग्रेस विधायक दल की बैठक होने की भी कोई चर्चा नहीं है इस संबंध में निर्णय दिल्ली में होगा, जहां गहलोत खड़गे को अपने पक्ष में खड़ा होने के लिए तैयार कर सकते हैं।

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। किसी ने भी, हाँ किसी ने भी अब राजस्थान में कांग्रेस की हार की जिम्मेदारी नहीं नहीं ली है।

ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा राजस्थान के प्रभारी रंधावा ने अपना त्याग पत्र देने के कोई संकेत नहीं दिये है, औपचारिकता के नाते भी नहीं। क्या वे बर्खास्त होने का इन्तज़ार कर रहे हैं। जयपुर यह आम कार्यकर्ताओं के द्वारा भी यह सवाल पूछा जा रहा है।

यह बात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डोटासरा पर भी लागू है, जिन्होंने मतगणना में दिनभर पिछड़ने के बाद अन्ततः अपना चुनाव जीत पाये थे।

डोटासरा ने भी हार की जिम्मेदारी लेते हुए अपने त्याग पत्र की पेशकश नहीं की है। दोनों ही अशोक गहलोत के इशारों पर काम करने वाले माने जाते हैं और वे गहलोत के कहे अनुसार ही कुछ करते हैं।

गहलोत को कल राज्यपाल से मिलना पड़ा था और और त्याग पत्र देना पड़ा था। यह उनका संवैधानिक कर्तव्य था, क्योंकि वे संख्या के खेल में हार गये थे और सत्ता में रहने का अधिकारी खो चुके थे। वरना गहलोत अपना त्याग पत्र देने में विश्वास करने वालों में नहीं जाने जाते हैं। वे अपनी कुर्सी पर चिपके रहने में विश्वास करते हैं।

सभी को उनका बार-बार दोहराया गया वाक्य याद है, "यदि मैं कुर्सी छोड़ना भी चाहूँ तो, कुर्सी मुझे नहीं छोड़ेगी। भविष्य में भी नहीं।" फिर एक दिन उन्होंने और भी रहस्यमय दावा दिया।" यदि मैं यह अनेक बार कह रहा हूँ, तो इसका कोई कारण अवश्य होगा।" जनता अभी भी वह कारण तलाश रही है।

रंधावा ने जयपुर वार रूम में एक बैठक बुलाई, परिणामों पर विचार करने तथा आंकलन करने के लिए। डोटासरा उनके पास बैठे थे।

पर हार के लिये जिम्मेदार व्यक्ति कहाँ था, अशोक गहलोत?

उन्होंने अपना दिन सरकारी निवास पर आराम करते हुए बिताया।

क्या उन्होंने सामान पैक करना शुरु कर दिया है?

स्पष्ट नहीं है कि क्या वे यह जानते हैं कि नैतिकता का तकाजा है कि मुख्यमंत्री का निवास यथा शीघ्र खाली कर दिया जाना चाहिए, ताकि नया मुख्यमंत्री वहाँ निवास कर सके।

सी.एल.पी. की कोई बैठक तय नहीं हुई है क्योंकि पार्टी को बैठक करके तथा सी.एल.पी. नेता चुनना होगा।

यह निर्णय दिल्ली में लिया जायेगा। हालांकि, गहलोत खड़गे पर 'दबाव' बना रहे हैं उनका पक्ष लेने के लिये।

सचिन पायलट जो आज टोंक गये थे, ने कहा कि पार्टी को राजस्थान की हार पर खुल कर पूरी तरह से विचार करना चाहिये और हार के कारणों को स्पष्ट करना चाहिये।

उन्होंने गहलोत के लम्बे समय तक ओ.एस.डी. रहे लोकेश शर्मा के विस्फोटक व्यक्तव्य तथा दावों पर भी गहन विचार करने की मांग की।

अभी तक कांग्रेस कार्यकर्ता चुप है, पर बहुत से नेताओं के हार पर बोलने की संभावना है। रंधावा के व्यवहार पर सवाल उठेंगे, जो अशोक गहलोत की कठपूतली की तरह काम कर रहे थे और पार्टी के ऐसे शर्मनाक प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे।

ADMISSION CLOSING SOON
B.A.-LL.B.
BIYANI LAW COLLEGE (Co-Ed.)
Affiliated to Dr. Bhimrao Ambedkar Law University, Jaipur
Helpline : +91-7737823249

अभी इंतज़ार करना होगा नए मु.मंत्री के लिए

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। भाजपा ने राजस्थान के अगले मुख्यमंत्री की चयन प्रक्रिया शुरु कर दी है। प्रदेश अध्यक्ष सी.पी. जोशी ने गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात कर उन्हें अगले मुख्यमंत्री से सम्बंधित फीड़बैक दिया।

- प्रदेश अध्यक्ष सी.पी. जोशी ने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर नए मुख्यमंत्री के चयन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। पर भाजपा आगामी लोकसभा चुनाव को ध्यान में रख कर ही कोई निर्णय लेगी।

सूत्रों का कहना है कि जल्दी ही राजस्थान के लिए पर्यवेक्षकों की घोषणा कर दी जाएगी। उसके बाद पार्टी नेताओं से चर्चा की जाएगी। संभावना है कि पार्टी पहले मध्यप्रदेश, फिर छत्तीसगढ़ और फिर राजस्थान पर निर्णय करेगी। इस प्रक्रिया में कुछ दिन लग सकते हैं। पता चला है कि नरेन्द्र मोदी आगामी लोकसभा चुनावों को देखते हुए ऐसा निर्णय लेंगे जिससे पार्टी को लाभ हो।

अभी राज्य की सभी 25 लोकसभा सीटों पर भाजपा काबिज है और पार्टी इसे कायम रखना चाहेगी इसके लिए जातिगत और क्षेत्रवार समीकरणों का ध्यान रखना पड़ेगा। अन्ततोगत्वा पार्टी को उम्मीद है कि मोदी के नाम का जादू चलेगा और अंतिम फैसला वे ही करेंगे।

कांग्रेस की हार से सबसे ज्यादा खुश हैं ममता बनर्जी

ममता बनर्जी ने इंडिया गठबंधन का नेतृत्व हासिल करने की कोशिश भी शुरू कर दी है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- बंगाल की राजनीति के कारण ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ बिल्कुल भी सहज नहीं है और इंडिया गठबंधन में इस राष्ट्रीय पार्टी के रूतबे को वे सहन नहीं कर पाती हैं।
- चुनाव नतीजों के बीच उन्होंने पार्टी प्रवक्ता के जरिए बयान दिलवा दिया कि, अब ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन का चेहरा बना देना चाहिए।

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। जैसी कि उनकी आदत है, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बचकानी हरकत कर विपक्ष के "इण्डिया" गठबंधन के नेतृत्व को हथियाने की कोशिश कर रही हैं। गठबंधन की 6 दिसम्बर को मीटिंग है जिसमें आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर चर्चा होगी, लेकिन ममता इसमें भाग लेने से इंकार कर रही है।

अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के दौरान उनकी तृणमूल कांग्रेस भाजपा नेतृत्व वाले एन.डी.ए. का घटक दल थी। उन्होंने तब भी ऐसा ही व्यवहार किया था।

हाल ही सम्पन्न विधानसभा चुनावों के नतीजे जब पूरे भी नहीं थे, तब ममता बनर्जी ने अपने प्रवक्ता से कहा कि वह यह घोषणा करे कि कांग्रेस की विफलता को देखते हुए, एक ममता बनर्जी ही ऐसी हैं जो इण्डिया गठबंधन का नेतृत्व कर सकती हैं।

चुनाव परिणाम जब आधे ही आए थे, तब तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता कुणाल घोष ने कांग्रेस की कड़ी भर्त्सना की थी। इससे पहले भी, ममता बनर्जी को वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए विपक्ष के चेहरे के रूप में प्रोजैक्ट किया गया था। टी.एम.सी. सांसद डेरेक-ओ-ब्रायन ने इण्डिया गठबंधन के गठन के बाद ही इस बात पर जोर दिया था, लेकिन तब यह गणित चल नहीं पायी थी।

अब, विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार के बाद बनर्जी ने इण्डिया गठबंधन के प्रमुख पद के लिए सबसे पहले दावा किया। उन्हें एक बार फिर गंभीरता से शयद ही लिया जाए क्योंकि पश्चिम बंगाल से बाहर उनका एक भी विधायक नहीं है।

इतना ही नहीं, बंगाल के अलावा अन्य राज्यों में पार्टी की उपस्थिति ना होने के कारण चुनाव आयोग तृणमूल कांग्रेस को एक क्षेत्रीय पार्टी घोषित कर चुका है।

ममता ने कहा है कि कांग्रेस का विधानसभा चुनाव विपक्षी पार्टियों के साथ मिलकर लड़ना चाहिए था और उनके साथ सीट शेयरिंग करनी चाहिए थी। इण्डिया गठबंधन की कुछ अन्य पार्टियां भी नाराज़ हैं और कुछ तो सीधे-सीधे कांग्रेस की आलोचना कर रही हैं।

इसके बावजूद इन विधानसभा चुनावों ने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का कोई प्रतिद्वंदी नहीं है। इन राज्यों में किसी अन्य पार्टी की कोई उपस्थिति नहीं है और कांग्रेस ने दक्षिण भारत का जो राज्य हथियाया है, वह एक ऐसी पार्टी से हथियाया है, जिसकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाएं थीं।

तेलंगाना में स्थानीय पार्टी बी.आर.एस. की करारी हार कम से कम एक राज्य में कांग्रेस के पुनरुत्थान का संकेत देती है। जहां हाल ही चुनाव सम्पन्न हुए, वहां भी कांग्रेस की कोई हल्की उपस्थिति नहीं है। उसने राजस्थान में 70, मध्य प्रदेश में 71 और छत्तीसगढ़ में भी अच्छी सीटें जीती हैं। इन राज्यों में किसी भी अन्य पार्टी की कांग्रेस के आस-पास सीटें नहीं है। हाल ही सम्पन्न विधानसभा चुनावों में कांग्रेस हार गई, लेकिन इसका कारण कांग्रेस के कुछ शीर्ष नेताओं और उनके सहयोगियों की गैर-जिम्मेदाराना टिप्पणियां थीं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या रैवन्त रेड्डी होंगे तेलंगाना में कांग्रेस के पहले मुख्यमंत्री

कांग्रेस आलाकमान ने रैवन्त के नाम पर सैद्धांतिक स्वीकृति दे दी है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- पार्टी सूत्रों के अनुसार तेलंगाना में डी.के. शिवकुमार व केन्द्रीय नेताओं ने सभी विधायकों से बात की है तथा विधायकों का बहुमत रैवन्त रेड्डी को मुख्यमंत्री बनाना चाहता है।
- डी.के. शिवकुमार व केन्द्रीय ए.आई.सी.सी. पर्यवेक्षक दिल्ली गए हैं, आलाकमान से चर्चा करने।

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। तेलंगाना की जनता ने कांग्रेस के पक्ष में जनादेश दिया है और अब वहां भी "पोलिटिकल थ्रिलर ड्रामा" शुरू हो गया है "कौन बनेगा मुख्यमंत्री"। कांग्रेस का शो "आर.आर.आर." राहुल, रैवन्त और रेड्डी आम जनता में सुपरहिट हो गया जिसके सूत्रधार थे युवा एवं ऊर्जावान नेता रैवन्त रेड्डी। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार और दिल्ली के ए.आई.सी.सी. पर्यवेक्षकों के समक्ष कांग्रेस विधायक दल की बैठक में मुख्यमंत्री पद की दौड़ शुरू हो गई। पूरे दिन पार्टी नेता और विधायक एक चर्चा के लिए प्राइवेट होटल में बने रहे और सरकार गठन पर चर्चा चली।

हमेशा की तरह नेतृत्व के मुद्दे पर कुछ गतिरोध। केन्द्रीय पर्यवेक्षक कुछ समय तक आम सहमति नहीं बना पाए। शिवकुमार एवं केन्द्रीय पार्टी नेतृत्व ने पूरा दिन हरेक विधायक के साथ चर्चा की। इसके बाद शिवकुमार एवं ए.आई.सी.सी. पर्यवेक्षक नेतृत्व को जानकारी देने दिल्ली चले गए। लेकिन इस सारे ड्रामा से पहले राजभवन में 8 बजे शपथ ग्रहण की घोषणा कर दी गई थी और आनन फानन में राजभवन ने शपथ ग्रहण की तैयारी शुरू कर दी गई और निमंत्रण भेज दिए गए। उसके बाद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

JOB/VACANCY
MARKETING EXECUTIVE
TELECALLER (F)
ACCOUNTANT
OFFICE BOY
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
JAIPUR
9352107080

महुआ निष्कासन से बचीं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- एथिक्स कमेटी और प्रिविलेज कमेटी के टकराव ने महुआ की लोकसभा सदस्यता बचा ली।

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। कांग्रेस सांसद शशि थरुर ने सवाल के बदले पैसा लेने के मामले से निपटने के सरकार के तरीके की धज्जियां उड़ा दी और एथिक्स कमेटी पर तथा विशेषाधिकार (प्रिविलेज) कमेटी से इसके रिश्ते पर सवाल उठाए।

उन्होंने एथिक्स कमेटी की रिपोर्ट को दर गुजर करने की आलोचना की और पारदर्शिता व उत्तर दायित्व के सम्बंध में सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि हमारे एथिक्स कमेटी पर मूल सवाल हैं। प्रिविलेज कमेटी और एथिक्स कमेटी के क्षेत्राधिकार में "ओवरलैपिंग" नहीं होनी चाहिए।

गत शुक्रवार को लोकसभा की बिजनैस एडवायज़री कमेटी ने उन्हें सोमवार को सदर ने निकालने का दावा किया था पर दोनों पैनलों के टकराव ने महुआ को निष्कासन से बचा लिया।

चुनाव नतीजों के कारण इंडिया गठबंधन में कांग्रेस का रूतबा घटा है

कर्नाटक चुनावों के बाद इंडिया गठबंधन में कांग्रेस का कद बढ़ गया और पार्टी ने अपना प्रभुत्व जमाना भी शुरू कर दिया था

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- पर विधानसभा नतीजों के बाद इंडिया गठबंधन के घटक दलों की आम राय है कि अगर पार्टी सहयोगी दलों को साथ लेकर चलती तो नतीजे कुछ और होते।
- चुनाव हारते ही कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने "इंडिया" की बैठक बुलाई है, जिस पर भी सहयोगी दलों ने कटाक्ष किया।
- एक प्रमुख विपक्षी पार्टी के नेता ने कहा कि, कांग्रेस चुनाव नतीजों का इंतजार कर रही थी ताकि "इंडिया" गठबंधन में ज्यादा सौदेबाजी कर सके पर हुआ उल्टा।

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। तीन हिंदी भाषी राज्यों छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में शर्मनाक पराजय झेलने के बाद कांग्रेस बैकफुट पर आने को बाध्य हो गई है। वह विपक्ष के गठबंधन इण्डियन नैशनल डवलपमैंट अलायंस (इण्डिया) की बुधवार को एक मीटिंग आयोजित कर रही है, जिसमें इस गठबंधन की कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाएगा।

उक्त तीनों राज्यों में मिली हार के बाद "इण्डिया" गठबंधन के सहयोगी आक्रामक मुद्रा में आ गए हैं और उसे इस बात का दोष दे रहे हैं कि उसने गठबंधन के कुछ सहयोगियों के साथ सीट शेयरिंग समझौता नहीं किया, खासतौर पर समाजवादी पार्टी के साथ, जिसमें मध्य प्रदेश में अपने 72 प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारे, लेकिन कोई भी सीट नहीं जीत पायी। मध्य प्रदेश में सपा का 0.43 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। हिंदी भाषी उक्त तीनों राज्यों में अच्छा जनाधार रखने वाली कांग्रेस अब "इण्डिया" गठबंधन में संतुलन स्थापित करने को लेकर फूंक-फूंक कर कदम बढ़ा रही है।

एक नेता ने बताया कि "कांग्रेस दुविधा का सामना कर रही है क्योंकि सफलता का श्रेय सभी लेना चाहते हैं, लेकिन विफलता का कोई भी नहीं। अब वह आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा को कड़ी चुनौती देने के लिए स्वयं को समायोजित करने का प्रयास कर रही है।" तीन राज्यों में भाजपा के हाथों बड़ी पराजय झेलने के बावजूद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने विपक्ष के गठबंधन की अगली मीटिंग बुलाए जाने की मांग की। गठबंधन की पिछली मीटिंग्स 31 अगस्त और 1 सितम्बर को मुम्बई में हुई थी।

हिंदी भाषी राज्यों में कांग्रेस की पराजय ने विपक्ष के "इण्डिया" गठबंधन में कांग्रेस के प्रति नाराज़गी बढ़ा दी है। वह यह उल्लेख कर रहा है कि विपक्ष के मुख्य दल कांग्रेस ने अपने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)